रयत शिक्षण संस्था संचलित

महात्मा फुले महाविद्यालय,पिंपरी,पुणे -17

हिंदी विभाग

टी.वाय.बी.ए.-हिंदी स्पेशल (S-3)

हिंदी साहित्य का इतिहास

(सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय,पुणे)

ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि : कबीर

-प्रस्तुति-

डॉ.कामायनी गजानन सुर्वे

सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

निर्गुण भक्तिकाव्य

भक्तिकाल :

हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग

समय :

वि.सं.1375 से 1700 तक अर्थात

1318 से 1618 ईस्वी. तक

निर्गुण भक्ति की 2 शाखाएँ

ज्ञानाश्रयी शाखा

(संत साहित्य)

प्रेमाश्रयी शाखा

कबीर

कबीर : व्यक्तिगत जानकारी

https://youtu.be/HH1PXnKg2LU

जन्म :वि.सं.1455-काशी

कबीर के गुरु –रामानंद

जन्म के बारे में जनश्रुतियाँ

परिजन –माता-पिता :नीरू ,नीमा ,पत्नी –लोई ,संतान :कमाल और कमाली

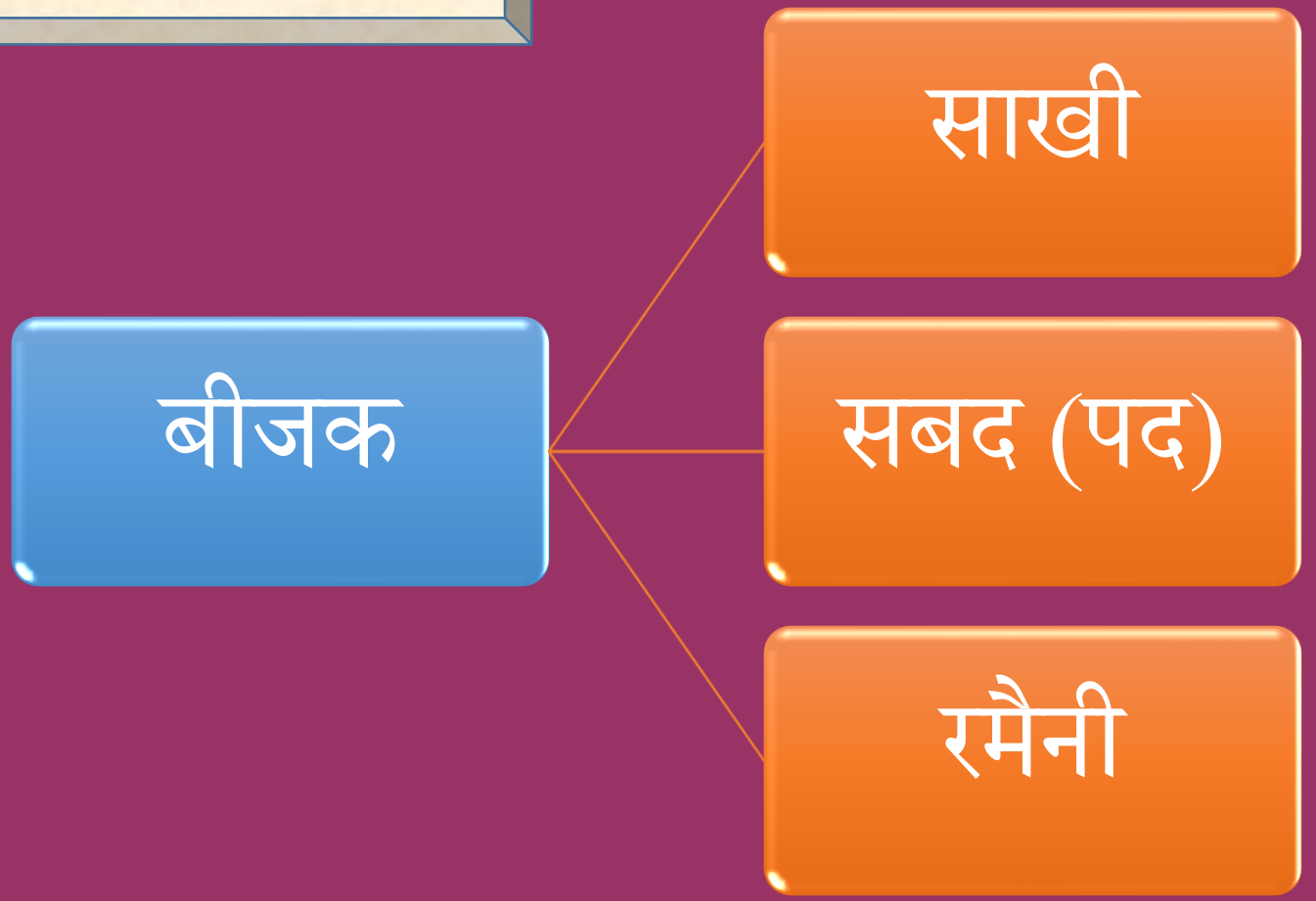
मृत्यु :वि.सं.1575-मगहर

कबीर का व्यक्तित्व

स्वाभाव से फक्कड़

मस्तमौला

कबीर का कृतित्व



कबीर का समाजसुधारक रूप

- जातिभेद का विरोध
- बाह्य आडंबर पर प्रहार
- हिंदु-मुस्लिम एकता का समर्थन
- सामाजिक समता का महत्त्व
- निंदक के बारे में कबीर के विचार
- जनसाधारण के लिए समाज दर्शन

कबीर के दार्शनिक विचार



कबीर की भाषा

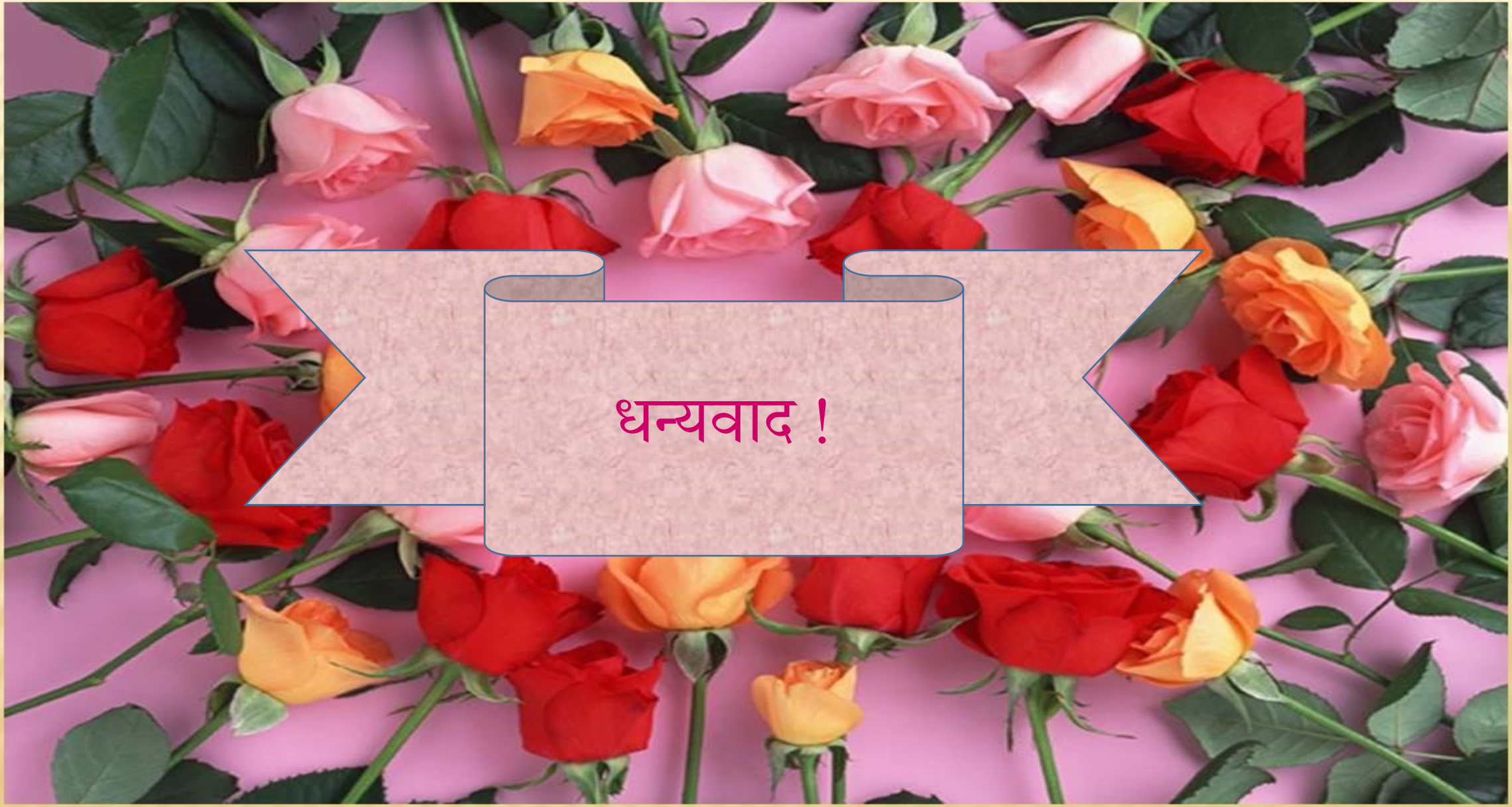
भाषा पर कबीर का जबर्दस्त अधिकार

सधुक्कड़ी

वाणी के डिक्टेटर

कबीर काव्य की प्रासंगिकता

आज 21 वीं शताब्दी में कबीर के विचार प्रासंगिक


धन्यवाद !